डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

अप्सरा साधना सिद्धि

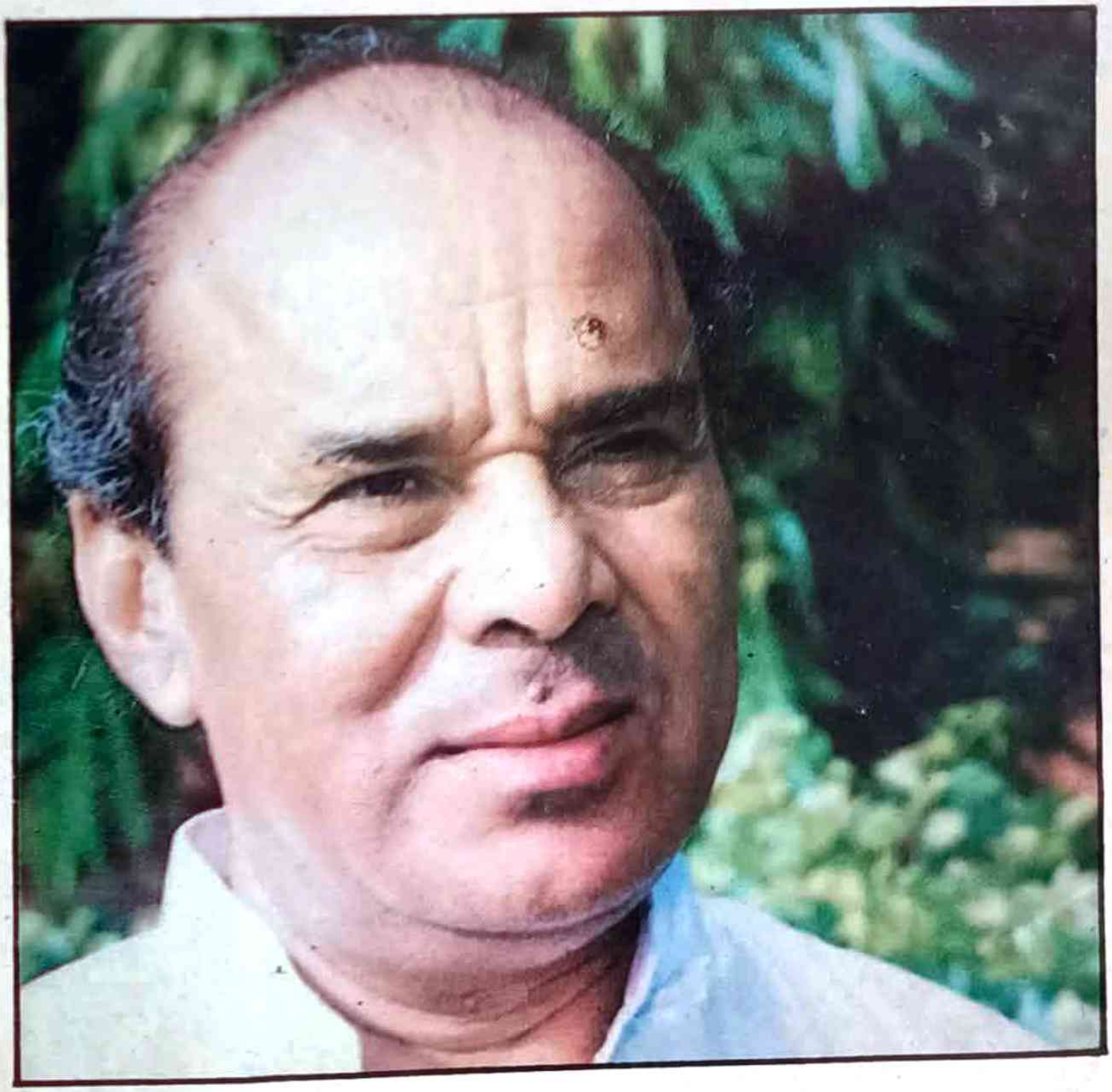

एस-सीरिज

अरविन्द प्रकाशन, जोधपुर

Download Book ~ https://www.hindibook.in

रहस्य रोमांच

जीवन को झकझोर कर रख देने वाली

पुस्तक श्रंखला

एस-सीरिज में उपलब्ध हैं

अद्भुत और सांस रोक कर पढ़ने योग्य ये छः पुस्तकें

न्त्रिक त्रिजटा अघोरी	***सिद्धाश्रम***
ोमांचक व्यक्तित्व , वर्णन	इस धरा पर देव लोक!
भुवनेश्वरी साधना	***मैं बाहें फैलाए खड़ा हूं***
ाकस्मिक धन प्राप्ति साधना	पूज्यपाद गुरुदेव का आह्वान
अप्सरा साधना सिद्धि	***हंसा! उड़हूं गगन की ओर***
ामाणिक विवरण व साधनाएं	आध्यात्मिक अपूर्व पुस्तक

अरविन्द प्रकाशन

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी , जोधपुर (राज.)

टेली- ०२९१-३२२०६

अप्सरा साधना सिद्धि

गुरुदेव

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी

जोधपुर (राजस्थान) - ३४२००१

फोन: ०२९१-३२२०६

Download Book ~ https://www.hindibook.in

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर (राज.)-३४२००१
फोनः०२६१-३२२०६

संस्करण : १६६३

मूल्य : ५.०० (पांच रुपये)

मुद्रक : नव शक्ति इन्डस्ट्रीज,
C. १३, न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका से साभार लेख

प्राक्कथन

आज जबकि निरंतर बढ़ती जा रही विषमताओं में, पुनः आध्यात्मिकता की छांव ढूँढी जा रही है, फिर से भारतीय परम्पराओं की बात कही-सुनी जाने लगी है, भारतीय विद्याओं की पुनर्व्याख्या और समीचीनता अनुभव की जा रही है, भौतिकता में छुपी रिक्तता अनुभव की जा रही है - व्यक्ति के समक्ष कोई स्पष्ट मार्ग नहीं है, जो उन्हें पूर्ण तृप्ति दे सके। कहने को तो बहुत से मत हैं, बहुत सी पद्धतियां हैं, लेकिन ऐसा कोई भी नहीं जो उसे अपनी सुगन्ध से आप्लावित कर दे . . . ऐसी घटाटोप स्थिति में एक नाम स्वतः ही उभर कर समक्ष आता है -- **''पूज्यपाद सद्गुरु गुरुदेव डा० नारायण दत्त श्रीमाली जी''** का - एक ऐसा दैवी व्यक्तित्व, जिनके पास जाते ही मन की सारी समस्यायें और मन का सारा तनाव, स्वतः समाप्त होने की क्रिया में आ जाता है, और इस तथ्य के साक्षीभूत हैं, उनके सैकड़ों-हजारों वे शिष्य, जो उनका धनिष्ठ साहचर्य प्राप्त कर चुके हैं।

एक श्रेष्ठ ज्योतिषी के रूप में, एक प्रख्यात ज्योतिर्विद् के रूप में वे सम्पूर्ण देश की सीमाओं से

Download Book ~ https://www.hindibook.in

बाहर भी विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में विख्यात रहे हैं, लेकिन उनके विराट व्यक्तित्व का तो यह केवल एक पहलू भर है। वास्तव में तो वे इस विसंगति से भरे नैराश्य और घुटन की पीड़ा के अन्धकार में, एक ज्योतिर्विद् से भी अधिक, एक ज्योतिपुंज के समान हैं, जिनके दैदीप्यमान मुख-मंडल पर सदैव ही आलोकित रहती है -- दैवी आभा। सचमुच उनके नेत्रों में जहां एक ओर उपस्थित है सूर्य जैसा तीव्र तपोबल का प्रभाव, वहीं उनके रोम-रोम से और मुख - मुद्रा से फूटती स्मित हास्य साक्षात पूर्णिमा के चन्द्र के समान ही सुधामय है, किंतु इस ज्योतिपुंज को स्पर्श करने के लिये व्यक्ति को थोड़ा तो प्रयास करना ही होगा, जिस प्रकार से बन्द पड़े कमरे में केवल एक खिड़की खोलना प्रर्याप्त होता है और एक ही क्षण में सूर्य अपनी तेजस्विता और चन्द्रमा अपनी पीयूष रश्मियों का प्रवेश बिना किसी हिचकिचाहट के औदार्य पूर्वक कर देता है, वही स्थिति होती है किसी भी तपः पूत एवं ऐसे ऋषि के समक्ष। सूर्य का प्रकाश या चन्द्रमा की किरणें धीरे-धीरे करके कमरे में प्रवेश नहीं करतीं, यह तो निर्भर करता है कि व्यक्ति ने उनके प्रवेश के लिये क्या स्थान बनाया है, ठीक यही स्थिति है 'पूज्यपाद गुरुदेव' के सन्दर्भ में। प्रारम्भिक प्रयास

करने की आवश्यकता है और आप्लावित कर लेना है अपने आप को उनकी दिव्यता से, केवल एक उपस्थिति के पश्चात्, फिर उनके व्यक्तित्व के बारे में अधिक कुछ कहने-सुनने की आवश्यकता शेष रह ही कहां जाती है!

यह जीवन का एक सत्य है कि ऐसे दिव्य व्यक्तित्व इस धरा पर अधिक समय के लिये अवतीर्ण नहीं होते। पूज्यपाद गुरुदेव भी यदि इस धरा पर उपस्थित हैं, तो केवल अपने गुरुदेव **'पूज्यपाद परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द जी'** की आज्ञा को शिरोधार्य करने के कारण, जिससे कि छल, कपट, व्याभिचार और निरंतर यद्धों से बोझिल हो गई इस धरा पर पुनः शांति और सौजन्यता का वातावरण स्थापित किया जा सके। युद्ध और साम्प्रदायिक तनाव किसी एक स्थान पर ही केन्द्रित नहीं रहते, इनसे उत्पन्न होने वाली घृणा की लहरियां, भय का प्रकोप, धीरे-धीरे बढ़ता हुआ, पूरी मानवता को सहमा कर रख देता है, और यही तो देख रहे हैं हम -- आप जीवन में प्रतिदिन। जिस प्रकार जंगली घास धीरे- धीरे बढ़ती हुई, अपने मध्य में खिले हुए इक्का-दुक्का सुन्दर पुष्पों को भी दबोच कर रख देती है, उन्हें अपने तीक्ष्ण किनारों से विदीर्ण कर देती है, उसी प्रकार यदि कहीं कोई इक्का-दुक्का मानवीय गुणों से युक्त व्यक्ति है भी

Download Book ~ https://www.hindibook.in

तो वह सहम-सिमट जाता है ऐसी ही दूषित प्रवृतियों के बीच में, और इस जंगली घास को, घृणा-वैमनस्य की इन घास-पतवारों को समाप्त करने के लिए जो अस्त्र उठाना पड़ता है, वही साधना जगत में होता है -- दैवी कृपा का बल। आज पूज्यपाद गुरुदेव के वरदहस्त के नीचे **'सिद्धाश्रम साधक परिवार'** संस्था में ऐसे ही सैकड़ों साधक और सुयोग्य शिष्य आगे बढ़कर उन मूल्यों के प्रतिस्थापन के लिये सन्नद्ध हैं, जो कि अन्य लोगों द्वारा केवल की कहा - सुना जाने वाला विषय मात्र है।

आज जबकि विश्व में युद्ध की काली छाया दिन-प्रतिदिन गहरी होती जा रही है, सन्देह और उहापोह के वातावरण में जीवन निराश और हताश होता जा रहा है, तब पूज्यपाद गुरुदेव का इस प्रकार से सक्रिय होना सचमुच आश्चर्यजनक है। **प्रचार और प्रसार से सर्वथा दूर रहते हुए, आलोचनाओं और विरोधों में अपने को अडिग बनाये रखते हुए, उन्होंने मौन रहते हुए, साधनाओं की ऐसी गंगा प्रवहित की है, जो आज गंगासागर जैसी पूर्णता प्राप्त कर चुकी है।** क्योंकि यह नदी बीच में समाप्त होने वाली नदी नहीं है, यह प्रवाहित हुई है एक देवपुंज के द्वारा, और जाकर पूर्णता से मिलती है वहां-- जहां जीवन का महासमुद्र लहरा रहा है। अन्य मतों की भांति

पूज्यपाद सद्‌गुरु गुरुदेव ने पोथी-पत्रों में बन्द होने वाला ज्ञान या अटपटा और रहस्यमय ज्ञान अपने पाठकों और शिष्यों को नहीं दिया। निरंतर कटु आलोचनाओं के बीच भी **उन्होंने "मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" पत्रिका द्वारा समाज को ऐसा दुर्लभ ज्ञान और गोपनीय साधनाएं दी हैं, जिनकी उपादेयता का मूल्यांकन, शायद समाज आज नहीं कर पाएगा।**

केवल साधनाओं का ज्ञान ही नहीं, केवल उपदेश ही नहीं, उन्होंने अपने तपस्यात्मक अंश को जिस प्रकार से दीक्षाओं के माध्यम से निःसंकोच वितरित किया है, उसे देखकर तो **यही कहना पड़ता है कि वास्तव में भगवान शिव ही गुरु बनकर अवतरित हुए हैं,** क्योंकि अपना सर्वस्व लुटा देने की प्रवृत्ति भगवान शिव के अतिरिक्त किस अन्य देवी या देवता में नहीं रही है. . . धर्म- चक्र प्रवर्तन है यह! बुद्धत्व का पुनः आगमन है इस धरा पर, जिनत्व का पुनर्प्रकटीकरण है, राम की मर्यादा और कृष्ण का श्रृंगार भी तो! क्योंकि गुरुदेव ने पहली बार अपने व्यक्तित्व से शास्त्रों में निहित इस तथ्य को प्रकट किया है कि गुरु तो वास्तव में चौंसठ कलाओं से पूर्ण व्यक्तित्व होते हैं, जीवन के प्रत्येक रंग, प्रत्येक सुख-दुख और विसंगति का ज्ञान होता है उन्हें, और इसी की

Download Book ~ https://www.hindibook.in

पुष्टि होती है।

पूज्यपाद गुरु देव ने स्वयं गृहस्थ जीवन को "धारण" कर एक आम व्यक्ति की तरह ही नित्यप्रति की समस्याओं से जूझ कर, केवल एक परिवार का ही नहीं, अपने सैकड़ों हजारों शिष्य रूपी पुत्रों का भी दायित्व अत्यन्त कुशलता पूर्वक वहन कर, जिस प्रकार प्राचीन गुरु - शिष्य परम्परा का एक ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत किया है, उसकी तो समता आने वाले समय में सम्भव ही नहीं हो सकेगी। ऐसे ही मानवीय गुणों से आपूरित, तपः पुंज से विभूषित, ऋषियों और मुनियों के जीवन में चिन्तनीय, योगियों द्वारा वन्दनीय पूज्यपाद गुरुदेव को शत् शत् वन्दन।

-- **प्रकाशक**

उर्वशी के साथ तीन दिन

देवताओं का स्वर्ग **कानन वन** है, तो पृथ्वी का स्वर्ग मानसरोवर। विशाल प्राकृतिक झील, जिसका पानी बिल्लोरी शीशे की तरह चमकदार पारदर्शक और स्वच्छ है, जिसकी तलहटी पर यदि कोई मोती भी पड़ा हो तो ऊपर से साफ-साफ दिखाई देता है, जिसके चारों ओर उच्च कोटि के पुष्प विकसित हैं, जैसे हिमालय ने अत्यन्त ही मधुरता के साथ अपना श्रृंगार किया हो, ऐसा लगता है, जैसे हिमालय ने अपनी पूर्ण निधि वहां बिखेर दी हो, प्रकृति ने दोनों हाथों से अपने आपको लुटा दिया हो।

इसके साथ ही साथ यह स्थान साधना की दृष्टि से भी अद्वितीय और मनोहर है, प्राचीनकाल से ही उच्चकोटि के योगी और साधक यहां तपस्या करने आते रहे हैं, यहां का कण-कण उन उच्च कोटि के योगियों और तपस्वियों से मुखरित

Download Book ~ https://www.hindibook.in

है, जिन्होंने यहां बैठकर तपस्या की है, यहां के चप्पे-चप्पे पर देवताओं और सिद्धों के पदचाप हैं, **यहां के कण-कण पर लामाओं और साधकों की साधनाओं के मंत्र सुभासित हैं,** वास्तव में ही वे मनुष्य धन्य है, जो अपने पांवों से मानसरोवर तक जाते हैं, इसके मधुर शीतल जल में स्नान करते हैं और यहां की प्रकृति से अपने आपको एकाकार कर पाने में समर्थ होते हैं।

मानसरोवर से उत्तर में पुराणों में वर्णित कैलाश पर्वत है, जो सफेद निर्मल बर्फ का मुकुट पहने हुए गौरवमय दिखाई देता है **दूर से मानसरोवर के तट से कैलाश पर्वत को देखने पर वह पर्वत दिखाई नहीं देता अपितु ऐसा प्रतीत होता है मानों साक्षात शंकर ही ध्यानस्थ बैठे हों,** उनके सिर की श्वेत लम्बी जटाएं, चारों से गंगा एक-एक बूंद ढुलक कर नीचे आती हुई अद्‌भुत और आश्चर्यजनक . . . अद्वितीय और मनोहारी है यह कैलाश पर्वत और इसके आसपास की भूमि। यहां सैकड़ों गुफाएं और कन्दराएं हैं, जहां तिब्बत के उच्च कोटि के लामा साधना करते रहते हैं, ऐसे शीतल वातावरण में भी महायोगी विचरण करते हुए, साधना करते हुए और ध्यानस्थ बैठे दिखाई दे जाते हैं।

भगवान शिव के शब्दों में जो मानसरोवर व कैलाशपर्वत के आस-पास साधना करता है उसे जीवन में और

उस साधना में अवश्य सफलता प्राप्त होती है, क्योंकि उसे अनायास और अप्रत्यक्ष रूप से भगवान शिव का वरदान प्राप्त होता रहता है।

सिद्धाश्रम के योगियों के लिए तो यह भूमि अत्यन्त प्रिय स्थल रहा है, जहां बारी-बारी से उच्च कोटि के योगी आते हैं, और महत्वपूर्ण साधनाएं सम्पन्न कर सिद्धाश्रम लौट जाते हैं, यहां पर कभी भी किसी भी समय सिद्धाश्रम के उच्च कोटि के योगी विचरण करते हुए या साधना करते हुए दिखाई दे जाते हैं।

पृथ्वी पर दो ही स्वर्ग है, पहला सिद्धाश्रम और दूसरा मान सरोवर के निकट "कानन-शिला"। **यह शिला श्वेत स्फटिक पत्थर की है, जो लगभग आधी मील लम्बी और इतनी ही चौड़ी है।** यह कुदरत का करिश्मा ही है, कि बाकी सारे पहाड़ और पत्थर भूरे रंग के हैं, वहां यह एक मात्र इतनी लम्बी चौड़ी शिला दुग्ध धवल स्फटिक की है, ऐसा लगता है जैसे इन्द्र ने स्वयं नन्दन कानन से इस शिला को लाकर यहां हौले से रख दिया हो।

संसार की यह एकमात्र बिना जोड़ की शिला है, जो इतनी लम्बी चौड़ी भी है, साथ ही इसके ऊपर का धरातल चिकना पारदर्शी और स्वच्छ है, योगियों ने इस शिला को **"कानन-शिला"** कहा है। इस शिला की यह विशेषता है कि यह मरकत स्फटिक शिला है और इस पर बैठने से व्यक्ति को

Download Book ~ https://www.hindibook.in

भूख, प्यास, निद्रा, सर्दी, गर्मी आदि का कोई प्रभाव व्याप्त नहीं होता, साधक आनन्द पूर्वक बिना किसी प्राकृतिक बाधा के अपनी साधना सम्पन्न कर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

पिछले वर्ष गुरु पूर्णिमा के अवसर पर योगीराज **भृगु महाराज** ने अलग-अलग योगियों का अलग-अलग कार्य सौंपे, उनमें से **महायोगी विज्ञानानंद** को **ब्रह्मांड साधना** सम्पन्न करने की आज्ञा दी जिसमें कि इस साधना का रहस्य पता लगाया जा सके, और अन्य साधक उसके प्रकाश में यह साधना सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सकें।

ब्रह्मांड साधना अत्यन्त उच्चकोटि की महत्वपूर्ण साधना है, जिसे भारतवर्ष के बहुत ही कम योगियों ने सिद्ध किया है। इस साधना को सम्पन्न करने पर साधक इंद्र के समान महत्वपूर्ण बन जाता है और उसे ब्रह्मांड की समस्त सुख-सुविधाएं प्राप्त हो जाती हैं।

उस समारोह में सिद्धाश्रम के समस्त साधक और योगी उपस्थित थे। इतनी महत्वपूर्ण साधना के लिए स्वामी विज्ञानानन्द का चयन स्वभाविक था। वे वास्तव में ही अत्यन्त उच्चकोटि के योगी हैं और उन्होंने आज के युग में साधना के द्वारा जो कुछ प्राप्त किया है, जिस स्तर पर पुहंचे हैं, वह सम्माननीय और

श्रद्धास्पद है।

उच्च कोटि के योगी होते हुए भी वे स्वामी निखिलेश्वरानंद जी के प्रति असीम श्रद्धा रखते हैं। स्वामी **निखिलेश्वरानंद जी** ने कहा तुम्हें जीवन का एक सौभाग्य प्राप्त हुआ है, तुम्हें अवश्य ही मानसरोवर के तट पर **"कानन-शिला"** पर बैठकर इस साधना को सम्पन्न करना चाहिए, जिससे सफलता में किसी प्रकार की कोई न्यूनता न रहे। उन्होंने हौंसला बढ़ाते हुए कहा मैंने स्वयं उसी शिला पर यह साधना सम्पन्न की थी फिर उन्होंने साधना के मार्ग में आने वाली बाधाओं को समझाया, और कहा- "आपके साथ मैं स्वामी गिरिराज को भेज रहा हूं, यह आपकी सेवा करेंगे, आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें, पूरे प्रयत्न के साथ साधना में बैठें, गुरुदेव की कृपा से आप अवश्य ही सफलता प्राप्त करेंगे।"

मेरे लिए तो यह आकस्मिक वरदान था, मैं तो निखिलेश्वरानंद जी के चरणों में बैठकर अपने जीवन को धन्य और सार्थक कर रहा था, मुझे ज्ञात नहीं था कि ऐसी महत्वपूर्ण साधना में मुझे भी सहयोगी बनने का अवसर मिलेगा, जब **निखिलेश्वरानंद जी** ने मेरी तरफ संकेत कर कहा कि **स्वामी गिरिराज** को आपके साथ भेज रहा हूं, तो मेरा रोम-रोम पुलकित हो गया। विज्ञानानंद ने एक क्षण के लिए मेरी तरफ देखा और अपने साथ चलने की अनुमति प्रदान कर दी।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

कानन शिला मैंने अपने जीवन में पहली बार देखी थी, इसे देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया, **यह प्रकृति का बेजोड़ और अद्वितीय वरदान है, जब मैंने पहली बार इस शिला को हौले से स्पर्श किया, तो मेरे सारे शरीर में एक विद्युत प्रवाह सा दौड़ा था।** वास्तव में यह शिला मंत्र सिद्ध है, उच्च कोटि के योगियों और साधकों के द्वारा इस पर साधना करते रहने की वजह से यह दिव्य और अनुपम बन गई है। यह शिला अपने आप में ही सिद्ध पीठ बन गई है और इस पर बैठते ही व्यक्ति को जो सुख और आनन्द अनुभव होता है, उसकी समता इस विश्व में कहीं पर नहीं है।

वास्तव में ही **विज्ञानानंद** उच्चकोटि के महायोगी हैं, उस कानन शिला पर बैठकर जिस प्रकार से वह अकम्पित साधनारत हुए, वह वास्तव में ही सराहनीय था यह साधना तीस दिन की थी और मैंने देखा कि पच्चीस दिन बीतने पर भी वे ज्यों के त्यों ध्यानस्थ रहे, न तो उन्होंने एक बार भी आंखें खोलीं और न इस पूरी अवधि में एक बार भी उनके शरीर में कोई कम्पन ही हुआ, वे निश्चल भाव से जिस आसन पर बैठे थे, उस पर बराबर बैठे रहे, होठों से ही स्फुट-अस्फुट ध्वनि निःसृत हो जाती थी, इसके अलावा किसी प्रकार का कोई कम्पन उनके पूरे शरीर पर व्याप्त नहीं था। इस प्रकार का ध्यानस्थ होना उच्चकोटि के योगियों के लिए ही सम्भव है।

मैं नित्य प्रातःकाल उषाकाल में मानसरोवर के तट पर जाकर स्नान करता और वापस आकर कानन शिला पर बैठ अपनी दैनिक साधना, पूजा-पाठ सम्पन्न करता, इसके अतिरिक्त मेरा और कोई कार्य नहीं था, **पूज्य गुरुदेव निखिलेश्वरानंद जी** की आज्ञा थी कि साधनाकाल में उनके पास बने रहना है, इसलिए बाकी सारा समय मैं उनके पास बैठा रहता और चकोर की तरह उनके तेजस्वी चेहरे को एकटक ताकता रहता। मुझे वह वातावरण, वह स्थल, वह साधना सब कुछ पवित्र, दिव्य, मनोहारी और अवर्णनीय प्रतीत होता, वास्तव में ही मैं इस अवधि में अपने आपको रोमांचित और धन्य अनुभव कर रहा था।

लगभग छब्बीस दिन बीत गए थे, अब तो मात्र चार दिन ही बाकी थे, आकाश में बादल छाये हुए थे, कुछ ही समय पहले वर्षा होने के वजह से पूरी प्रकृति धुल गई थी, मैं स्नान करके कानन शिला पर आकर बैठा ही था, कि **तभी 'छन्न' की आवाज आई और मेरी एकाग्रता टूट गई,** सामने देखा तो देखता ही रहा गया, स्वामी विज्ञानानंद के ठीक सामने लगभग पांच सात फीट की दूरी पर एक अनिन्द्य अद्वितीय सुन्दरी खड़ी थी, उस निर्जन वन में यह सुंदरी कहां से और किस तरफ से आयी? किस प्रकार से इस शिला पर अचानक दिखाई दी, मैं कुछ भी अनुमान नहीं लगा सका। **यदि निश्छल भाव से कहूं तो मैं**

Download Book ~ https://www.hindibook.in

उस सुन्दरी के रूप और सौंदर्य के सामने स्तम्भित सा हो गया था, एक बार तो मेरे पूरे शरीर का खून उफन कर शरीर में जोरों से चक्कर लगाने लगा, मैं अपने आप पर नियंत्रण नहीं कर पा रहा था, मैं समझ नहीं पा रहा था कि यह कौन है, कोई अप्सरा या रति है, या कोई पिशाच या राक्षस योनि ऐसा छल युक्त रूप धारण कर उपस्थित हुई है। उस क्षण मैं कुछ भी सोचने विचारने लायक नहीं रह गया था, और मेरी आंखें अपलक एकटक उसके चेहरे पर गड़ी हुई थीं, जो कि मुझ से मात्र सात-आठ फीट की दूरी पर खड़ी थी।

सुंदर होना, सुंदर दिखना और सुंदरता का सम्मान करना उसकी प्रशंसा और सराहना करना मानव का धर्म है। मैंने अपने जीवन में सिद्धाश्रम में अनिन्द्य सुंदर साधिकाओं और संन्यासिनियों को देखा है, सिद्धयोगा झील पर अद्वितीय सुंदरियों की जल-क्रीड़ा, हास्य और किलोल अपनी आंखों से देखा है। एक से एक बढ़कर सुंदरियों के साथ साधनारत हुआ हूं, परंतु मेरा मन कभी भी विचलित और अनियन्त्रित नहीं हुआ, आज पहली बार मैंने उस शिला पर जो कुछ देखा वह अवर्णनीय था, उसके रूप यौवन और श्रृंगार के सामने वे सारी सुंदरियां बौनी और तुच्छ सी लग रही थीं, **उसकी सुंदर देह यष्टि के सामने पुराणों में वर्णित सारा सौंदर्य वर्णन व्यर्थ सा प्रतीत हो रहा था, पहली बार मेरा मन अनियन्त्रित हुआ, पहली बार मैं अपने आप**

पर काबू न पा सका, पहली बार मेरे ऊपर कामुकता की हल्की सी परत अनुभव हुई, पहली बार उसे प्राप्त करने, उसके पास बैठने और उससे बातचीत करने की इच्छा जागृत हुई।

मैंने अपने आपके ऊपर काबू किया और प्रयत्न कर अपने आपको संयत करने की कोशिश की और उसकी तरफ देखा, मुझे चैतन्यावस्था में अनुभव कर और सामान्य संयत देखकर वह रूपसी हौले से मुस्करा दी, उस एक मुस्कराहट के सामने चारों ओर बिखरी हुई प्रकृति श्रीहीन और फीकी सी लग रही थी, उस एक मुस्कराहट पर हिमालय तो क्या सारे संसार का वैभव न्यौछावर था।

चैतन्य होकर मैंने गहरी और सार्थक निगाहों से उसे देखा, लगभग बीस - इक्कीस वर्ष की सुंदर, स्वस्थ, यौवन की आभा से दीप्त तरुणी मेरे सामने खड़ी थी, **अण्डाकार सुंदर चेहरा, यौवन, प्रेम और सौन्दर्य से गुलाबी हो रहा था, उस पर गहरी झील सी नीली आंखें अद्वितीय दिखाई दे रही थीं, होंठ ऐसे प्रतीत हो रहे थे, माना दो गुलाबी पंखुड़ियों को एक दूसरी पर रख दिया हो और चिबुक के छोटे से गड्ढे में समस्त संसार का यौवन कूद पड़ने के लिए आतुर था, हंसनी ग्रीवा और उन्नत उभरे हुए वक्ष ऐसे प्रतीत हो रहे थे, मानो दो ऋषि खड़े होकर सूर्य को अर्घ्य दे रहे हों, वक्षस्थल पर कस कर कंचुकी बंधी हुई थी,** और नाभि के नीचे नील वर्णीय परिधान पहना हुआ

अत्याधिक आकर्षक और स्वप्निल अनुभव हो रहा था, हस्ती सुण्ड की तरह जंघाएं और पायलों में छोटे-छोटे घुंघरु बंधे होने के वजह से पैर अत्यधिक आकर्षक और सुंदर लग रहे थे, सिर के बाल लम्बे और पीछे जंघाओं को छू रहे थे, यौवन भार से झुका हुआ उसका शरीर ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो कामदेव अपनी प्रत्यंचा को टेढ़ी कर पूरे विश्व पर विजय प्राप्त करने के लिए आतुर हो, अनिन्द्य सुंदरी के उस रूप, यौवन और मधुरता की त्रिवेणी में स्नान कर मैं अपने आपके ऊपर नियन्त्रित नहीं कर पा रहा था, शायद विधाता ने बहुत ही फुरसत के क्षणों में उसके एक-एक अंग को गढ़ा होगा, अत्यधिक गौर वर्ण और उस पर लज्जा का गुलाबी आवरण चढ़ा हुआ ऐसा लग रहा था, मानों प्रातःकालीन उषा ने चारों ओर गुलाल बिखेर दी हो, उसकी एक-एक मुस्कराहट पर सौ-सौ स्वर्ग और कानन वन न्यौछावर थे, निश्चय ही वह अनिन्द्य और अद्वितीय सुन्दरी थी, जिसकी क्षमता इस पृथ्वी पर न तो सम्भव थी, और न है।

मैं अभी तक अपलक उस सौन्दर्यशालिनी को देख रहा था, समझ नहीं पा रहा था कि मैं इस नवागन्तुक अतिथि की कैसे अभ्यर्थना करूं, क्या कहूं, कैसे कहूं? **तभी गुलाबी पंखुड़ियों में हल्का सा कम्पन हुआ, उसने अपना परिचय देते हुए कहा, - ''मैं इन्द्र साम्राज्य की नृत्यांगना उर्वशी हूं, मेरे मन में स्वामी विज्ञानानंद छा गए हैं** और मैं इनकी साधना

पर मुग्ध हूं, मैंने इन्द्र साम्राज्य छोड़ दिया है, क्योंकि मेरे चित्त पर तो विज्ञानानंद की तपस्या और श्रेष्ठता हावी हो गई है, मैं इन्हें वरण करने के लिए कटिबद्ध हूं।''

योगी और सुंदरी . . . सुंदरी और योगी . . . एक आश्चर्य है, इन दोनों का समन्वय कैसे सम्भव है? और फिर विज्ञानानंद तो उच्चकोटि के साधक हैं, वह इस रूपसी उर्वशी को वरण करें, यह सर्वथा असम्भव प्रतीत हो रहा है, **पर इसमें इसका भी क्या दोष? यह तो बेचारी अपने दिल के हाथों मजबूर है,** इसके चित्त पर तो विज्ञानानंद का आर्कषण हावी हो गया है, तभी तो उसने इन्द्र का साम्राज्य छोड़ा है, तभी तो यह समस्त सुख-सुविधाओं, भोग और ऐश्वर्य को छोड़कर इस निर्जन जंगल में अपने प्रणय के सामने आई है, **तभी तो यह स्वर्ग को छोड़कर मनुष्य लोक में हमेशा-हमेशा के लिए जुड़ जाने के लिए उपस्थित हुई है, पर विज्ञानानंद जी** को कौन कहे, मेरे लिए तो यह सर्वथा असम्भव है, मैं तो ऐसी बात होठों पर ला ही नहीं सकता।

मैं अब तक उस तरफ अपलक देख रहा था, उसके मुंह से निकले हुए शब्द मेरे अंतर को मथ रंहे थे, मेरे सारे शरीर को और अंतरमन को उसके शब्दों ने आलोड़ित - विलोड़ित कर दिया था, सचमुच ऐसा प्रतीत हुआ मानों उसके मुंह से अमृत की फुहार बरस गई हो और उससे मेरा सारा शरीर तन, मन, प्राण और अंतर भीग कर अनिवर्चनीय आनन्द से ओतप्रोत हो

Download Book ~ https://www.hindibook.in

गया हो।

मैंने कहा, - "आप उर्वशी हैं, अनिन्द्य और अद्वितीय सुंदरी, चिरयौवनमय, अविवाहिता अप्सरा, आपको प्रणय निवेदन करने का अधिकार है, पर मैं आपके संदेश को स्वामी तक नहीं पहुंचा सकता, वे ध्यानस्थ हैं, चार दिन बाद जब वे चैतन्य होंगे तब आप अपनी बात उनके सामने रख सकती हैं।"

उसने गहरी और सार्थक निगाहों से मुझे देखा और दूसरे क्षण उसके पैरों में कम्पन आरम्भ हुआ, उन घुंघरुओं की झंकार से सारा वन प्रांत मुखरित और सुवासित हो उठा, **'छूम् छनन् छन छनन्'** की ध्वनि से सारा हिमालय हजार-हजार मुंह से बोलने लगा, धीरे-धीरे मैंने देखा कि उसके पैरों में गति आ रही है, वह नृत्य की भाव - भंगिमा के द्वारा शायद स्वामी विज्ञानानंद की समाधि तोड़ने का निश्चय कर चुकी है, मुझे सारे पुराण एकबारगी याद हो आए। **उर्वशी ने तो विश्वामित्र और पराशर जैसे ऋषियों की समाधि तोड़ दी थी** और आज यदि नृत्य के माध्यम से स्वामी विज्ञानानंद की एकाग्रता और ध्यान को तोड़ दे तो इसमें आश्चर्य क्या? उर्वशी को अपनी बात कहने का, प्रणय निवेदन करने का अधिकार है, और यदि संभव हुआ तो मैं इसे इसके अधिकार को दिलाने में अवश्य ही सहायक बनूंगा।

मैं पुनः चैतन्य हुआ और देखा कि **उस स्फटिक शिला पर सुन्दरी उर्वशी के सुकोमल पैर गतिशील है,** घुंघरुओं की लयबद्ध ध्वनि पूरे वातावरण में मुखरित हो रही है, धीरे-धीरे पैरों की गति, उसकी चपलता और चंचलता बढ़ रही है, अवश्य ही प्रकृति स्वयं उर्वशी के साथ है, तभी तो इस नृत्य के साथ-साथ पृष्ठभूमि में वाद्य ध्वनि झंकृत हो रही है, तभी तो सारी प्रकृति सांस रोक कर इस अद्‌भुत और अद्वितीय नृत्य को देख रही है, तभी तो यह सारी फिजां, यह सारा वातावरण अचानक सुगन्धित और सुवासित हो उठा है।

पैरों की गति बढ़ गई थी, पता नहीं पड़ रहा था कि कब पैर उठ रहे हैं, और कब पैर शिला को छू रहे हैं, एक विशेष लय के साथ उसके दोनों पैर गतिशील थे, और घुंघरुओं की छनछनाहट के साथ लयबद्ध नृत्य मुखरित हो रहा था। एक विशेष मुद्रा, एक विशेष लोच, एक विशेष भंगिमा के साथ सारा शरीर नृत्य में गतिशील होना, मुद्रा प्रदर्शन करना और चपलता के साथ नृत्य युक्त होना आश्चर्यजनक था, अद्वितीय था, अवर्णनीय था।

कब दिन ढला कब सांझ हुई पता ही नहीं चला, **उसके सुंदर गोरे ललाट पर पसीने की बूंदें चू रही थीं, स्वेद से कंचुकी भीग कर शरीर से चिपक गई थी,** नाजुक और गोरे पैर अभी तक लयबद्ध नृत्य हेतु गतिशील थे, परंतु न उर्वशी रुक रही

Download Book ~ https://www.hindibook.in

थी, और न स्वामी विज्ञानानंद चैतन्य हो रहे थे, इतने समय तक नृत्य करने से पत्थर भी अपनी आंखें खोल देता, इन्द्र भी विचलित हो जाता पर विज्ञानानंद अभी भी ध्यानस्थ थे, अभी तक भी निश्चल, अकम्पित आसन पर स्थिर थे।

धीरे-धीरे रात्रि हुई, चन्द्रमा ने कुछ समय पहले ही आकाश में आकर उस दृश्य को देखने का सफल-असफल प्रयास किया, परंतु अब **उर्वशी पूर्ण रूप से थक कर चूर होकर उसी शिला पर पर विज्ञानानंद के सामने बैठी हुई थी ,** उसका चेहरा उदास था, जैसे कि किसी सद्यस्नात गुलाब पर ओस की परत जम गई हो, मन ही मन वह झुंझला रही थी, शायद उसे स्वप्न में भी गुमान नहीं था, कि उसका सौन्दर्य इस प्रकार से पराजित प्रताड़ित हो जाएगा, फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी थी, जिसने भी उसको इस कार्य के लिए भेजा था, उसके प्रति वह विश्वसनीय थी, वह उसी प्रकार सौन्दर्य की साक्षात् स्वर्ण राशि बनी वहीं बैठी रही, और अपलक नेत्रों से स्वामी विज्ञानानंद को निहारती रही।

लगभग चार बजे प्रातः वह न जाने कहां अदृश्य हो गई, मैं भी उठकर मानसरोवर के तट पर पहुंचा और मल मल कर स्नान किया, **मेरा सारा शरीर ताप से फुंक रहा था, स्नान करने पर मुझे शीतलता अनुभव हुई,** कितने समय तक पानी में घुसा रहा, कुछ पता नहीं चला। सूर्य की पहली किरण के

साथ मैं **कानन शिला** पर पहुंचा, तो विज्ञानानंद निश्चल भाव से ध्यानस्थ बैठे हुए थे।

लगभग आठ साढ़े आठ बजे वह फिर आई परंतु आज उसकी शोभा सौ-सौ गुनी ज्यादा थी, **नाभिदर्शना सुन्दरी उर्वशी ने अपना श्रृंगार आज जी भर कर किया था, कंचुकी आज और ज्यादा कस गई थी, सिर पर से लेकर धानी वस्त्र घुटनों तक पहना हुआ था,** सब कुछ नया-नया खिला महक रहा था, उसके शरीर से विशेष भीनी महक मैं अनुभव कर रहा था, उसने सर्वप्रथम स्वामी विज्ञानानंद को प्रणाम किया और कुछ क्षणों तक सामने बैठी रही।

मैं उससे बहुत कुछ पूछना चाहता था, पर मेरे मुंह से बोल निकल नहीं पा रहे थे, यह तो पता चल गया था, कि वह देव अप्सरा उर्वशी थी पर यहां क्यों आई है, क्यों इतना परिश्रम कर रही है, किसने उसे, किस विशेष उद्देश्य के लिए भेजा है, **ये सारे प्रश्न उस समय अधूरे रह गये जब उसने खड़े होकर एड़ी के टोहके से नृत्य का पहला कम्पन प्रारम्भ किया।**

आज भी वह उसी प्रकार उसी लय के साथ मूक मुद्रा युक्त नृत्य कर रही थी, परंतु सूर्य ढलने पर मैंने देखा कि विज्ञानानंद आज भी अवचिल अकम्पित ध्यानस्थ थे, एक क्षण के लिए मुझे विचार आया कि कहीं विज्ञानानंद का शरीर शांत तो नहीं हो गया, परंतु उनके होठों से निकलते हुए स्फुट-अस्फुट

Download Book ~ https://www.hindibook.in

शब्द उनकी जीवन्तता का परिचय दे रहे थे।

दूसरी रात मैं कुछ क्षणों के लिए लेटा तो अवश्य परंतु रात भर मुझे नींद नहीं आई, मैं लेटा हुआ था, और उर्वशी विज्ञानानंद के सामने अत्यन्त विलासमय रूप में बैठी हुई थी, प्रातःकाल उठकर मैंने स्नान किया, परंतु **जितना ही ज्यादा अपने शरीर पर पानी डालता था, उतनी ही दाहकता बढ़ती जाती,** थका हुआ शिथिल गति से चल कर मैं कानन शिला पर आया तब तक उर्वशी पुनः आ चुकी थी, रात्रि को कुछ समय के लिए वह कहीं चली गई थी, अवश्य ही अपना श्रृंगार करने और अपने आपको ज्यादा से ज्यादा मोहक बनाने के लिए किसी स्थान पर जाती होगी, परंतु आज तो प्रातः सात बजे से ही शिला पर उपस्थित थी, उसके चेहरे की मुख मुद्रा संकल्पित व कठोर थी, सम्भवतः उसने निश्चय कर लिया था, कि आज हर हालत में विजय प्राप्त करनी है, आज का नृत्य उसने जल्दी ही प्रारम्भ कर दिया, शायद वह नृत्य के द्वारा ही अपनी विजय को पूर्ण सार्थक समझ रही थी, ज्यों-ज्यों सूर्य का रथ आकाश की ओर अग्रसर हो रहा था, त्यों-त्यों उसके नृत्य की लय बढ़ती जा रही थी, साधना का आज अंतिम दिन था, और उस शिला पर उर्वशी का अत्यधिक मोहक, विलासमय सौन्दर्य से परिपूर्ण नृत्य गति की चरम सीमा पर था, धीरे-धीरे दोपहर हुई, सांझ ढली और शुभ्र आकाश में साक्षीभूत पूर्ण चांदनी के साथ चन्द्रमा भी

उपस्थित हुआ, पर **उर्वशी के पैर बराबर गतिशील बने रहे, पसीने से उसका शरीर भीग गया था, शरीर के वस्त्र चिपक गए थे, चेहरे पर स्वेद कण थिरक रहे थे, परंतु वह अपने सुंदर सुकोमल पैरों से नृत्यशील थी, थकावट से उसका सारा शरीर निढाल हो रहा था, निरंतर नृत्य में थोड़ा-थोड़ा खून बहने लग गया था,** जिससे शुभ्र स्फटिक शिला कहीं कहीं रक्तिम हो रही थी, मैंने देखा कि थकावट से चूर उर्वशी निढाल होकर संज्ञा शून्य सी स्वामी विज्ञानानंद के सामने गिर गई, उसके पैरों में कम्पन था, तलवों से खून की बूंदें छलछला रही थीं, और सारा शरीर संज्ञाशून्य सा महायोगी के सामने पसरा हुआ था।

मैंने देखा महायोगी उसी प्रकार शांत, समाधिस्थ थे, उनकी आंखों में किसी प्रकार का कोई कम्पन नहीं था, एक घण्टे तक संज्ञाशून्यता के बाद अनिन्द्य सुंदरी उर्वशी ने सिर ऊपर उठाया, मैंने देखा कि उसकी आंखों से अश्रुकण निकल रहे थे, कंठ अवरुद्ध हो गया था, गला भर आया था और दोनों हाथ जोड़े हुए उसका सारा शरीर थरथरा रहा था। एक क्षण के लिए मुझे स्वामी विज्ञानानंद पर क्रोध आया, परंतु मैं विवश था, मैं कर भी क्या सकता था, मैंने महसूस किया कि आज योग के सामने सौन्दर्य और विलास पराजित थे, एक योगी के सामने अनिन्द्य सुंदरी विवश, शक्तिहीन, भीतहिरणी की तरह थी, इतनी हिम्मत नहीं थी, कि वह विज्ञानानंद को स्पर्श करे

Download Book ~ https://www.hindibook.in

परंतु उसके चेहरे और आंखों से बहते हुए अश्रुकण अपनी पराजय अनुभव कर रहे थे, उसके मुंह से अस्फुट शब्द निकले **"मैं इन्द्र सभा की नृत्यांगना उर्वशी आपके सामने पराजित हूं,** आज पहली बार मैं अपने आपको विवश अनुभव कर रही हूं, पराजित होकर विदा लेती हूं, मेरा यौवन, मेरा सौन्दर्य सब कुछ व्यर्थ है, बेमानी है, योग के सामने यह सौन्दर्य पराजित और प्रताड़ित है" ऐसा कहते-कहते वह उठ खड़ी हुई, आंसुओं से सिक्त आंखों से उसने मुझे जी भर के देखा और धीरे-धीरे शिला से नीचे उतर कर उत्तर दिशा की ओर बढ़ गई।

दूसरा दिन हुआ, आकाश में सूर्य देव मुस्कराने लगे, मैं पिछले दिन की घटनाओं से स्तम्भित था, चाहे योगी ही हो पर नारी का इस प्रकार से अपमान मेरे लिए असह्य था, मैं गुरु आज्ञा से बंधा हुआ था। पहली बार मैंने योग के महत्व को अनुभव किया, पहली बार साधना के मूल्य और उसकी उच्चता को स्वीकार किया, पहली बार विज्ञानानंद के चरणों में अपने आपको धन्य-धन्य अनुभव किया।

आज साधना का अन्तिम दिन था, लगभग चार बजे महायोगी ने अपनी आंखें खोली, समाधि भंग हुई और सुंदर कमलवत् नेत्रों से पूर्ण शांति के साथ उन्होंने मेरी ओर देखा जैसे उन्हें पिछले तीन दिनों की घटनाओं का कोई भान न हो। साधना की सफलता उनके चेहरे पर प्रतिबिम्बित हो रही थी,

उनका मुख मंडल एक अपूर्व आभा और साधना की रश्मियों से दमक रहा था, वे अपने उद्देश्य में पूर्ण रूप से सफल हुए थे, और ब्रह्मांड साधना के द्वारा उन्होंने उन रहस्यों को पा लिया था, जो अभी तक सर्वथा अज्ञात थे।

तभी मैंने देखा कि योग मार्ग से पूज्य गुरुदेव **स्वामी निखिलेश्वरानंद जी** सवेग आ रहे हैं, मेरे चेहरे का और हृदय का मालिन्य एक बारगी समाप्त हो गया, संशय-असंशय के भाव मिट गए और ज्योंही वे शिला के पास पहुंचे, प्रसन्नता के साथ मैंने उन्हें प्रणाम किया, वे शिला पर विज्ञानानंद के पास जा खड़े हुए और उन्हें उठाकर अपने सीने से लगा लिया, बोले - "विज्ञान! तुमने दुहरी सफलता पाई है, ब्रह्मांड साधना में पूर्णता तो प्राप्त की ही है, **योग के द्वारा उर्वशी के गर्व को भी खण्डित किया है।"**

आज भी पौराणिक घटनाएं दुहराई जाती हैं, हिमालय में आज भी देवता और अप्सराएं मौजूद हैं, आज भी तपस्या की उच्चता से इन्द्र भयभीत होते हैं, और अप्सराओं के माध्यम से तपस्या में विघ्न डालने के लिए उनका प्रयोग करते हैं, और आज भी ऐसे महायोगी हैं जो इन सबसे परे पूर्णतः नियंत्रित और समर्थ हैं।

०००००

Download Book ~ https://www.hindibook.in

उर्वशी तंत्र

संसार की तीन अद्वितीय सुंदरियां मानी गई हैं, जिनके नाम **उर्वशी, रम्भा, और मेनका हैं,** इनमें भी **उर्वशी** का नाम सर्वोपरि है, और ये सुंदर स्त्रियां देवताओं के राजा इन्द्र की सभा में अद्वितीय नृत्य और सूर्य के समान सौन्दर्य से सबको अभिभूत किए रहती हैं।

उर्वशी के बारे में ग्रंथों में कहा गया है, कि वह चिरयौवना है, **हजारों वर्ष बीतने पर भी वह १८ वर्ष की उम्र की युवती के समान अल्हड़ मदमस्त और यौवन रस से परिपूर्ण रहती है,** सारा शरीर एक अद्वितीय सुन्दरता से परिपूर्ण रहता है, जिसको देखकर व्यक्ति तो क्या, देवता भी ठगे रह जाते हैं, **विश्वामित्र संहिता** के अनुसार **गोरा अण्डाकार चेहरा, लम्बे और एड़ियों को छूते हुए घने श्यामल केश, जैसे कोई बादलों की घटा उमड़ आई हो, गोरा रंग ऐसा, कि जैसे स्वच्छ दूध में केसर मिला दी हो, बड़ी-बड़ी खंजन पक्षी की तरह आंखें जो हर क्षण गहन जिज्ञासा लिए हुए इधर-उधर देखती**

हों, छोटी चिबुक, सुंदर और गुलाबी होंठ, आकर्षक चेहरा और अद्वितीय आभा से युक्त शरीर . . . सब मिलाकर एक ऐसा सौन्दर्य जो उंगली लगने पर मैला हो जाए ऐसी ही सौन्दर्य की सम्राज्ञी उर्वशी संसार की अद्वितीय सौन्दर्य सम्राज्ञी है, जो अपने यौवन सौन्दर्य के माध्यम से पूरे संसार को मोहित किए हुए है।

विश्वामित्र ने जब यह सुना कि उर्वशी इन्द्र के दरबार की उज्जवल सौन्दर्यमयी नृत्यांगना है जिसके नृत्य से मनुष्य तो क्या बहता हुआ पानी भी ठिठक कर रुक जाता है, तो उन्होंने आज्ञा दी कि उर्वशी मेरे आश्रम में भी नृत्य करे।

विश्वामित्र ने अपना संदेश इन्द्र तक पहुंचा दिया और इन्द्र ने हाथों- हाथ मना कर कहला दिया कि यह किसी भी प्रकार से सम्भव नहीं है।

विश्वामित्र तो हठी योगी रहे हैं, उन्होंने मंत्र बल से उर्वशी को अपने आश्रम में बुलाया और कहा तुम्हें ठीक वैसा ही नृत्य मेरे शिष्यों के सामने इस आश्रम में करना है, जैसा इन्द्र की सभा में तुम करती हो।

उर्वशी ने यौवन के नशे में चूर दम्भ से मना कर दिया और इठलाती हुई पुनः इन्द्रलोक चली गई।

विश्वामित्र तिलमिला कर रह गए। उन्होंने उसी

Download Book ~ https://www.hindibook.in

क्षण प्रतिज्ञा की कि मैं सर्वथा नये तंत्र की रचना करूंगा और तंत्र बल से इसे अपने आश्रम में बुलाऊंगा, एक बार नहीं जब भी चाहे नृत्य करवाऊंगा और इसी जिद्द और क्रोध का परिणाम हुआ **"उर्वशी तंत्र"।**

किसी भी अप्सरा को साधना चार रूपों में की जा सकती है। मां, बहन, पत्नी और प्रेमिका के रूप में साधना सम्पन्न करना श्रेष्ठ माना गया है। विश्वामित्र ने प्रेमिका रूप से तंत्र रचना की, इसी तंत्र के माध्यम से उर्वशी को अपने आश्रम में आने के लिए बाध्य किया और उसे अद्वितीय नृत्य करना पड़ा, इसके अलावा उर्वशी सिद्ध कर निम्न पदार्थ भी प्राप्त किए जाते हैं।

१. जब भी चाहे उर्वशी को प्रत्यक्ष बुलाए और उसका नृत्य देखे।
२. उर्वशी का प्रेमिका रूप में उपयोग करे, उसके साथ रमण करे।
३. उर्वशी के माध्यम से मनोरंजन प्राप्त करें।
४. उर्वशी के द्वारा अतुलनीय धन, वैभव प्राप्त करे।
५. उर्वशी के द्वारा चिरयौवन प्राप्त कर जीवन का पूर्ण आनन्द उपभोग करे।
६. उर्वशी सिद्ध कर उन पदार्थों और भोगों को प्राप्त करे जो उसके मन की आकांक्षा होती है।

विश्वामित्र के बाद उनके शिष्य भूरिश्रवा, चिन्मय, देवसुत, गन्धर, और यहां तक कि देवी विश्रवा और रत्नप्रभा ने भी उर्वशी सिद्ध कर जीवन के सम्पूर्ण भोगों का भोग किया। **गोरखनाथ** ने भी इस साधना के माध्यम से चिरयौवन प्राप्त किया और गोरक्षपुर में उन्होंने हजारों शिष्यों के सामने सदेह उर्वशी को बुलाकर अद्वितीय नृत्य सम्पन्न करवाया। इतिहास साक्षी है कि **स्वामी शंकराचार्य** ने इसी साधना को सम्पन्न कर अपने शिष्य पद्मपाद को अतुलनीय वैभव का स्वामी बना दिया, यहीं नहीं अपितु मंडन मिश्र से शास्त्रार्थ के दिनों में शंकराचार्य ने उर्वशी को तंत्र के माध्यम से उसे अपने सामने बुलाकर उससे काम कला की वे बारीकियां समझीं जो सन्यासी होने की वजह से उनके लिए असंभव थी, इसी साधना के बल पर आज से सौ साल पहले **स्वामी विशुद्धानंद जी** ने बनारस में नवमुण्डी आश्रम में अभिनव नृत्य कराकर अंग्रेजों को आश्चर्यचकित कर दिया था, और उस समय के तत्कालीन **कलेक्टर ब्लासिम** ने तो कहा था, कि मैंने अपनी जिन्दगी में ऐसी सुंदरी नहीं देखी, वह अचानक आई और जो नृत्य उसने किया वह आश्चर्यचकित करने वाला था।

उर्वशी साधना कोई भी साधक सम्पन्न कर

Download Book ~ https://www.hindibook.in

सकता है। शास्त्रों के अनुसार भी उर्वशी की साधना पत्नी या प्रेमिका के रूप में ही सम्पन्न करनी चाहिए।

साधना विधि-

यह साधना **४६ दिनों** की है, किसी भी पूर्णमासी की रात्रि से यह साधना प्रारम्भ की जाती है, घर के किसी कोने में सफेद आसन बिछाकर उत्तर की तरफ मुंह कर बैठ जांए, सामने घी का अखण्ड दीपक प्रज्ज्वलित करे और स्वयं पानी में गुलाब का थोड़ा सा इत्र मिलाकर स्नान कर स्वच्छ सफेद वस्त्र धारण कर आसन पर बैठ जांए, और सामने **उर्वशी यंत्र** और **चित्र** रखकर **मोती की माला** से मंत्र जप करे।

मंत्र

ॐ श्रीं क्लीं आगच्छागच्छ स्वाहा।

मंत्र जप समाप्ति के बाद उसी स्थान पर सो जाए।

इन ४६ दिनों में वह न तो किसी से बात करे, और न कमरे से बाहर जाए, केवल शौचादि क्रिया करने के लिए बाहर जा सकता है, **सातवें दिन** निश्चय ही घुंघरुओं की मधुर आवाज सुनाई देती है, मगर साधक

को चाहिए कि वह अविचलित भाव से मंत्र जप करता रहे, **इक्कीसवें दिन** बिल्कुल ऐसा लगेगा कि जैसे अपूर्व सी सुगन्ध फैल गई है, इसके बाद नित्य ऐसी सुगन्ध और ऐसा आभास होगा भी ही।

३६ वें दिन बिल्कुल ऐसा लगेगा कि जैसे कोई अद्वितीय सुन्दरी आसन के पास आकर बैठ गई है, मगर साधक अविचलित न हो और मंत्र जप करता रहे, **४७ वें दिन** साधक की परीक्षा आरम्भ होती है, और **वह सशरीर उपस्थित होकर साधक की गोदी में बैठ जाती है, फिर भी साधक को चाहिए कि वह न तो विचलित हो और न कामोत्तेजक हो, ४६ वें दिन वह अपूर्व श्रृंगार कर साधक से सट कर बैठ जाएगी और पूछेगी कि मेरे लिए क्या आज्ञा है,** तब साधक कहे कि मेरी पत्नी बन प्रेमिका की तरह प्रसन्न करो, तब वह सिद्ध हो जाती है, और जीवन भर सुख, काम, द्रव्य प्रदान करती रहती है।

यह आजमाया हुआ तंत्र है, और अपने आप में प्रामाणिक सिद्ध प्रयोग है, एक बार सिद्ध करने पर फिर जीवन में बार-बार प्रयोग करने की जरूरत नहीं रहती, इस साधना में तीन बातें आवश्यक हैं-

1. साधनाकाल में ४६ दिन तक किसी से भी कुछ भी न बोले।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

२. साधना के बाद उर्वशी सिद्ध होने पर परस्त्रीगमन न करे।

३. उर्वशी तंत्र सिद्ध होने पर उसके साथ रमण करे, जो कुछ भी चाहे प्राप्त करे, पर द्रव्य का दुरुयोग न करे।

यह साधना आज भी जीवित है, और वर्तमान में भी कई तांत्रिकों ने इसे सिद्ध कर रखा है, **वस्तुतः यह जीवन की एक अद्‌भुत और पूर्ण सुखोपभोग देने वाली सौन्दर्यमयी साधना है, जिस सिद्ध करने में शास्त्रीय दृष्टि से भी किसी प्रकार का बन्धन या दोष नहीं है।**

ooooo

मृगाक्षी अप्सरा

अप्सरा सिद्धि करना किसी भी दृष्टि से अमान्य और अनैतिक नहीं है, उच्चकोटि के योगियों, सन्यासियों, ऋषियों और देवताओं तक ने अप्सराओं और किन्नरियों की साधना की है, यों तो **'मंत्र महोदधि'** आदि अन्य तांत्रिक ग्रंथों में १०८ विभिन्न अप्सराओं की प्रामाणिक साधनाएं दी हुई हैं, और उनमें से कई अप्सराओं की साधनाएं साधकों ने सिद्ध की हैं, और उसका लाभ उठाया है।

पर हमें **"सुरति प्रिया"** वर्ग की अप्सरा साधना का प्रामणिक विवरण प्राप्त नहीं हो पा रहा था, **शिमला के पास चैल नाम का एक स्थान है, जो कि प्रकृति की दृष्टि से अत्यंत रमणीय और प्रसिद्ध स्थान है, जिसे महाराज पटियाला ने बसाया था।**

जब हम चैल के प्राकृतिक सौन्दर्य को आनन्द ले रहे

Download Book ~ https://www.hindibook.in

थे, तभी हमारी वहां पर एक गृहस्थ संन्यासी से भेंट हो गई, 'गृहस्थ संन्यासी' शब्द मैं इसलिए प्रयोग कर रहा हूं, कि वे सही अर्थों में तो हिमाचल में रहने वाले गृहस्थ ही हैं, जिनके एक पत्नी और तीन संतान हैं, परंतु यदि मूल रूप से देखा जाए तो वे संन्यासी हैं, उनका सारा जीवन तांत्रिक साधनाओं में ही व्यतीत हुआ, और तंत्र के क्षेत्र में वे अद्वितीय सिद्ध योगी हैं, उनका नाम **सौन्दर्यानंद जी** है।

हमारी जिज्ञासा बढ़ी, हमने नाम तो पहले भी सुन रखा था, और हमें यह ज्ञात था, कि अप्सरा साधनाओं में ये सिद्धहस्त आचार्य हैं, तथा इन्होंने लगभग सभी की सभी अप्सराओं की साधनाएं सम्पन्न की हैं। हमारी जिज्ञासा यह थी कि यदि हमें इनके द्वारा सुरति प्रिया अप्सरा साधना की जानकारी और साधना रहस्य ज्ञात हो जाए तो यह काफी महत्वपूर्ण कार्य होगा।

जब चर्चा गुरुदेव के बारे में चली तो उन्हें उनके साथ व्यतीत किए हुए दिन याद हो आए, उन्होंने बताया कि मैं लगभग एक वर्ष से भी ज्यादा उनके साथ **रोहतांग** के पास रहा था, और उनसे काफी कुछ साधनाएं मुझे प्राप्त हुई थीं।

पर इसके बाद मेरा रुझान अप्सरा साधना की ओर बढ़ गया, और मैंने अपने जीवन में यह निश्चय किया कि सभी साधनाओं को परख लूं और सभी साधनाएं संपन्न कर लूं, और मुझे इसमें पूरी कामयाबी मिली, लगभग सभी अप्सराओं को

मैंने सिद्ध किया है, यद्यपि उन सब की क्रिया, उन सब को सिद्ध करने का तरीका अपने आप में अलग है, और गोपनीय है, **यदि 'मंत्र महार्णव' आदि ग्रंथों में प्रकाशित साधनाओं के आधार पर इन्हें सिद्ध किया जाए तो सफलता नहीं मिल पाती।**

मैंने परिश्रम कर कई संन्यासियों से और इस क्षेत्र के श्रेष्ठ योगियों से मिल कर इन साधनाओं को सीखा है, सिद्ध किया है, उन्हें प्रत्यक्ष किया है, और अब मैं इससे संबंधित ग्रंथ लिख रहा हूं, **यदि साधकों का सौभाग्य होगा तो यह ग्रंथ प्रकाशित भी होगा।**

अप्सरा साधना सिद्ध करने से व्यक्ति निश्चिन्त और प्रसन्न चित्त बना रहता है, उसे अपने जीवन में मानसिक तनाव व्याप्त नहीं होता। अप्सरा के माध्यम से उसे मनचाहा स्वर्ण, द्रव्य, वस्त्र, आभूषण और अन्य भौतिक पदार्थ उपलब्ध होते रहते है, यही नहीं अपितु सिद्ध करने पर अप्सरा साधक के पूर्णतः वशवर्ती हो जाती है, और साधक जो भी आज्ञा देता है, उस आज्ञा का वह तत्परता के साथ पालन करती है।

साधक के चाहने पर वह सशरीर उपस्थित होती है, यों सूक्ष्म रूप से साधक की आंखों के सामने वह हमेशा बनी रहती है, इस प्रकार सिद्ध की हुई अप्सरा "प्रिया" रूप में ही साधक के साथ रहती है।

जब हमने सुरति प्रिया अप्सरा साधना रहस्य के बारे

Download Book ~ https://www.hindibook.in

में जिज्ञासा प्रगट की, तो वे एक क्षण के लिए चौंके, किंतु उन्हें यह ज्ञात था कि हम गुरुदेव के विधिवत दीक्षित शिष्य हैं, अतः उन्होंने 'मृगाक्षी अप्सरा साधना रहस्य' स्पष्ट कर दिया, जो कि अभी तक सर्वथा गोपनीय रहा है। *मृगाक्षी का तात्पर्य मृग के समान भोली और सुन्दर आंखों वाली अप्सरा से है, जो सुंदर, आकर्षक, मनोहर, चिरयौवनवती और प्रसन्न चित्त अप्सरा है, और निरंतर साधक का हित चिंतन करती रहती है, जिसके शरीर से निरंतर पद्म गंध प्रवहित होती रहती है, और जो एक बार सिद्ध होने पर जीवन भर साधक के वश में बनी रहती है।*

स्वामी जी ने हमें इससे संबंधित तांत्रिक प्रयोग स्पष्ट किया था, जो कि वास्तव में ही अचूक और महत्वपूर्ण है।

मृगाक्षी अप्सरा साधना रहस्य

किसी भी शुक्रवार की रात्रि को साधक अत्यन्त सुंदर सुसज्जित वस्त्र पहिन कर साधना स्थल पर बैठे, इसमें किसी भी प्रकार के वस्त्र पहने जा सकते हैं, जो सुंदर हों, आकर्षक हों, साथ ही साथ अपने कपड़ों पर गुलाब का इत्र लगावे और कान में भी गुलाब के इत्र का फोहा लगा दें।

फिर सामने गुलाब की दो मालाएं रखें और उसमें से एक माला साधना के समय स्वयं धारण कर लें।

इसके बाद एक थाली लें, जो कि लोहे की या स्टील

की न हो, फिर उस थाली में निम्न मृगाक्षी अप्सरा यंत्र का निर्माण चांदी के तार से या चांदी की सलाका से या केसर से अंकित करें।

मृगाक्षी अप्सरा यंत्र

मृ	२	३	न
गा	७		
क्षी	५	६	मः

फिर इस पात्र में पहले से ही सिद्ध किया हुआ, **'दिव्य तेजस्वी मृगाक्षी अप्सरा महायंत्र'** स्थापित करें, जो कि पूर्ण मंत्र सिद्ध प्राण चैतन्य और सिद्ध हो, इस यंत्र के चार कोनों पर चार बिन्दियां लगाएं और पात्र के चारों ओर चार घी के दीपक लगाएं, दीपक में जो घी डाला जाए, उसमें थोड़ा गुलाब का इत्र भी मिला दें, फिर पात्र के सामने पांचवां बड़ा सा दीपक घी का लगावें और अगरबत्ती प्रज्जवलित करें तथा इस मंत्र सिद्ध तेजस्वी "मृगाक्षी महायंत्र" पर २१ गुलाब के पुष्प निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चढ़ाएं।

मंत्र

ॐ मृगाक्षी अप्सरायै वश्यं कुरु कुरु फट्

Download Book ~ https://www.hindibook.in

जब २१ गुलाब के पुष्प चढ़ा चुकें तब प्रामाणिक और सही स्फटिक माला से निम्न मंत्र की २१ माला मंत्र जप करें, इस मंत्र जप में मुश्किल से दो घंटे लगते हैं।

गोपनीय मृगाक्षी महामंत्र

।। ॐ श्रृं श्रैं मृगाक्षी अप्सरायै सिद्धं वश्यं श्रैं श्रृं फट्।।

जब २१ माला मंत्र जप हो, जाए, तब वह स्फटिक माला भी अपने गले में धारण कर लें, ठीक इसी अवधि में जब मृगाक्षी अप्सरा कमरे में उपस्थित हो, **(साधना करते समय कमरे में साधक के अलावा और कोई प्राणी न हो)** तब सामने रखी हुई दूसरी गुलाब के पुष्प की माला उसके गले में पहना दें, और वचन लें कि वह जीवन भर अमुक गोत्र के अमुक पिता के अमुक पुत्र साधक के वश में रहेगी, और जब भी मैं इस मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करूंगा तब वह उपस्थित होगी, तथा जो भी आज्ञा दूंगा उसका तत्क्षण पालन करेगी।

ooooo

नाभिदर्शना अप्सरा

जब कालीदास ने अप्सरा को सिद्ध किया

मैं कालीदास पर पी० एच० डी० **कर रहा था, शोध करते-करते मुझे प्रामाणिक रूप से यह जानकारी मिली, कि कालीदास ने नाभि दर्शना अप्सरा को सिद्ध किया था, और इसी साधना की बदौलत उन्हें वचन सिद्धि प्राप्त हुई थी, इसी अप्सरा के सान्निध्य में रहने के की वजह से वे जीवन भर मस्ती में, उमंग में, जोश में, और आनन्द में काव्य लिखते रहे, उनके सारे काव्य का लक्ष्य ''नाभि दर्शना अप्सरा'' ही थी।**

राजा भोज के अत्यधिक हठ करने पर एक दिन कालीदास ने राजा भोज को नाभि दर्शना को प्रत्यक्ष प्रगट कर दिखा दिया, रूप में, सौन्दर्य में, और यौवन में वह छलकते हुए जाम की तरह थी, उसका सारा शरीर गौर वर्ण और चन्द्रमा

Download Book ~ https://www.hindibook.in

की चांदनी में नहाया हुआ सा लग रहा था, पुष्प से भी कोमल और नाजुक नाभि दर्शना को कालीदास के कक्ष में थिरकते देख कर राजा भोज अत्यधिक संयमित होते हुए भी बेसुध से हो गए, उनकी आंखों के सामने हर क्षण नाभिदर्शना ही दिखाई देती रही।

नाभि दर्शना को सिद्ध करने की वजह से ही कालीदास अपने जीवन में अटूट धन संपदा के स्वामी बने, वे नित्य नाभि दर्शना को साधना के बल पर प्रगट करते और उसके साथ उसी प्रकार से हास्य विनोद करते, मनोरंजन करते, लिपटते और बातें करते, जैसे कि कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका को प्राप्त करने के बाद करता है।

और नाभिदर्शना अत्यधिक प्रसन्न होकर बिना मांगे ही कालीदास को सोने के आभूषणों, स्वर्णमुद्राओं और विविध वस्त्रों से उस कक्ष में भर देती, कीमती उपहारों का ढेर लगा देती और अप्सरा लोक से अपने हाथों से स्वादिष्ट भोजन बनाकर कालीदास को भोजन कराती।

इस रिसर्च के दौरान मैंने भारत के कई स्थानों की यात्रा की, **उज्जैन के ग्रंथालय में मुझे एक हस्तलिखित प्रति में इसी घटना के बारे में पुनः जानकारी मिली कि नाभि दर्शना को प्रामाणिकता के साथ सिद्ध कर कालीदास ने जहां धन दौलत और ऐश्वर्य का ढेर लगा दिया था, वहीं उसके स्पर्श और साहचर्य**

से कालीदास का शरीर यौवन से परिपूर्ण हो गया था, उनके चेहरे पर एक अजीब सा आकर्षण और आनन्द को स्रोत उमड़ आया था, पूरा शरीर रोगरहित होकर थिरकने लगा था, और कायाकल्प कर कालीदास जीवनभर चिर यौवनमय बने रहे।

यहीं नहीं अपितु इस नाभि दर्शना अप्सरा के साहचर्य से उनकी काव्य प्रतिभा फूट पड़ी और उन्होंने **मेघदूत,** जैसे अद्वितीय काव्य की रचना की। इस मेघदूत में जिस सौन्दर्यमयी नायिका का वर्णन है, वह नाभिदर्शना अप्सरा ही है।

मैंने उस साधना विधि और मंत्र को नोट कर लिया, एक बार तो मैंने विचार किया कि इसके बारे में पूज्य गुरुदेवत जी से जानकारी प्राप्त करूं, और सलाह लूं परंतु दूसरे ही क्षण मैंने विचार किया कि यदि उनकी अस्वीकृति आ गई तो मुझे मन मार कर रह जाना पड़ेगा और मैं **मेघदूत** की उस सौन्दर्यमयी नायिका नाभिदर्शना अप्सरा को हर हालत में सिद्ध करना ही चाहता था, मैंने उस पुस्तक में लिखे हुए तरीके के अनुसार ही साधना सम्पन्न करने का निश्चय कर लिया।

नाभि दर्शना अप्सरा

यों तो साधना ग्रंथों में १०८ अप्सराओं के बारे में विवरण मिलता है और प्रत्येक अप्सरा को सिद्ध

Download Book ~ https://www.hindibook.in

करने की विधि भी दी हुई है, परंतु ये साधना ग्रंथ भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि नाभिदर्शना अप्सरा इन सब में श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण है। वह अद्वितीय सौन्दर्यमयी होने के साथ साथ दयालु है, और वह स्वयं बार बार पृथ्वी तल पर विचरण करना चाहती है, इसीलिए अन्य अप्सराओं की अपेक्षा नाभिदर्शना अप्सरा सिद्ध करना ज्यादा सरल है।

साधना ग्रंथों में नाभिदर्शना के बारे में जो कुछ मिलता है उसके अनुसार नाभिदर्शना, षोडश वर्षीय अत्यन्त सुकुमार और सौन्दर्य की सम्राज्ञी है। **उसका सारा शरीर कमल से भी ज्यादा नाजुक और गुलाब से भी ज्यादा सुंदर है, उसके सारे शरीर से धीमी धीमी खुशबू प्रवाहित होती रहती है, जो कि उसकी उपस्थिति का भान कराती रहती है,** इस अप्सरा की काली और लम्बी आंखें, लहराते हुए झरने की तरह केश और चन्द्रमा की तरह लम्बी बांहें और सुन्दरता से लिपटा हुआ पूरा शरीर एक अजीब सी मादकता बिखेर देता है, और इसे **इन्द्र का वरदान प्राप्त है, कि जो भी इसके सम्पर्क में आता है, वह पुरुष, पूर्ण रूप से रोगों से मुक्त होकर चिर यौवनमय बन जाता है, उसके शरीर का काया कल्प हो जाता है, और पौरुष की दृष्टि से वह अत्यन्त प्रभावशाली बन जाता है।**

और फिर नाभिदर्शना अप्सरा को विविध उपहार देने का शौक है। जो पुरुष इसके सम्पर्क में आता है, उसे यह हीरे,

मोती, स्वर्ण मुद्राओं से एवं विविध उपहारों से सिक्त कर देती है, जीवन भर उस पुरुष के अनुकूल रहती हुई वह उसका प्रत्येक मामले में मातृत्व की तरह विविध स्वादिष्ट भोजन कराती है, प्रेमिका की तरह सुख आनन्द की वर्षा करती रहती है।

नाभि दर्शना अप्सरा साधना

यह एक दिन की साधना है, और साधक इस साधना को सिद्ध कर सकता है, किसी भी शुक्रवार की रात्रि को यह साधना सिद्ध की जा सकती है।

इस साधना को सिद्ध करने की थोड़े बहुत धैर्य की जरूरत हैं, क्योंकि कई बार पहली बार में सफलता नहीं भी मिल पाती, तो साधक को चाहिए, कि वह इसी साधना को दूसरी बार या तीसरी बार भी सम्पन्न करें, परंतु अगले किसी भी शुक्रवार की रात्रि को ही यह साधना करें।

साधना समय

यह साधना रात्रि को ही सम्पन्न की जा सकती है, और साधक चाहे तो अपने घर में या किसी भी अन्य स्थान पर इस साधना को सम्पन्न कर सकता है।

किसी भी शुक्रवार की रात्रि को साधक सुंदर, सुसज्जित वस्त्र पहने, इसमें यह जरूरी नहीं है कि साधक

Download Book ~ https://www.hindibook.in

धोती ही पहिने, अपितु उसको जो वस्त्र प्रिय हो, जो वस्त्र उसके शरीर पर खिलते हों, या जिन वस्त्रों को पहिनने से वह सुन्दर लगता हो, वे वस्त्र धारण कर साधक उत्तर दिशा की ओर मुंह कर आसन पर बैठे।

बैठने से पूर्व अपने वस्त्रों पर सुगन्धित इत्र का छिड़काव करें और पहले से ही सुंदर गुलाब की मालाएं ला कर अलग पात्र में रख दें, यदि गुलाब की माला उपलब्ध न हो तो किसी भी प्रकार के पुष्पों की माला ला कर रख सकता है।

फिर सामने एक रेशमी वस्त्र पर अद्वितीय **''नाभि दर्शना महायंत्र''** को स्थापित करें और केसर से उस तिलक करें। यंत्र के पीछे **''नाभि दर्शना चित्र''** को फ्रेम में मढ़वा कर रख दें, और सामने सुगन्धित अगरबत्ती एवं शुद्ध घृत का दीपक लगाए।

इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं अमुक गोत्र अमुक पिता का पुत्र अमुक नाम का साधक नाभि दर्शना अप्सरा को प्रेमिका रूप में सिद्ध करना चाहता हूं, जिससे कि वह जीवन भर मेरे वश में रहे, और मुझे प्रेमिका की तरह ही सुख आनंद एवं ऐश्वर्य प्रदान करे।

इसके बाद **''नाभि दर्शना अप्सरा माला''** से निम्न मंत्र जप संपन्न करें, इसमें ५१ माला मंत्र जप उसी रात्रि को सम्पन्न हो जाना चाहिए, हो सकता है, इसमें तीन

या चार घंटे लगे।

अगर बीच में घुंघुरुओं की आवाज आए या किसी का स्पर्श अनुभव हो, तो साधक विचलित न हो और अपना ध्यान न हटाए, अपितु ५१ माला मंत्र जप एकाग्र चित्त हो कर सम्पन्न करें, इस साधना में जितनी ही ज्यादा एकाग्रता होगी, उतनी ही ज्यादा सफलता मिलेगी।

५१ माला पूरी होते होते जब यह अद्वितीय अप्सरा घुटने से घुटना सटाकर बैठ जाए, तब मंत्र जप पूरा होने के बाद साधक अप्सरा माला को स्वयं धारण कर लें, और सामने रखी हुई गुलाब की माला उसके गले में पहिना दें, ऐसा करने पर नाभि दर्शना अप्सरा भी सामने रखी हुई दूसरी माला उठा कर साधक के गले में डाल देती है।

तब साधक नाभिदर्शना अप्सरा से वचन ले ले कि मैं जब भी अप्सरा माला से एक मंत्र जप करूं, तब तुम्हें मेरे सामने सशरीर उपस्थित होना है, और मैं जो चाहूं वह मुझे प्राप्त होना चाहिए, पूरे जीवन भर मेरी आज्ञा को उल्लंघन न हो।

तब नाभि दर्शना अप्सरा साधक के हाथ पर अपना हाथ रखकर वचन देती है, कि मैं जीवन भर अपकी इच्छानुसार कार्य करती रहूंगी।

इस प्रकार साधना को पूर्ण समझें, और साधक

Download Book ~ https://www.hindibook.in

अप्सरा के जाने के बाद उठ खड़ा हो।

साधक को चाहिए, कि वह इस घटना को केवल अपने गुरु के अलावा और किसी के सामने स्पष्ट न करे, क्योंकि साधना ग्रंथों में ऐसा ही उल्लेख मुझे पढ़ने को मिला है।

मैंने जिस मंत्र से इस साधना को सिद्ध किया है, वह मंत्र है -

।। ॐ ऐं श्रीं नाभिदर्शना अप्सरा प्रत्यक्ष श्रीं ऐं फट्।।

उपरोक्त मंत्र गोपनीय है, साधना सम्पन्न होने पर नाभिदर्शना अप्सरा महायंत्र को अपने गोपनीय स्थान पर रख दें, और अप्सरा चित्र को भी अपने बाक्स में रख दें, जो गले में अप्सरा माला पहनी हुई है, वह भी अपने घर में गुप्त स्थान पर रख दें, जिससे कि कोई दूसरा उसका उपयोग न कर सके।

जब साधक को भविष्य में नाभिदर्शना अप्सरा को बुलाने की इच्छा हो, तब उस महायंत्र के सामने अप्सरा माला से उपरोक्त मंत्र की एक माला मंत्र जप कर लें, अभ्यास होने के बाद तो यंत्र या माला की आवश्यकता भी नहीं होती, केवल मात्र सौ बार मंत्र उच्चारण करने पर ही अप्सरा प्रत्यक्ष प्रगट हो जाती है।

ooooo

जीवन को निष्कंटक बनाने का रहस्य

ये छह मांत्रोक्त दीक्षाएं

पूज्यपाद गुरुदेव के वरद हस्त तले

१. गुरु दीक्षा : प्रारम्भिक एवं आवश्यक दीक्षा, प्रत्येक साधना की नींव।

२. ज्ञान दीक्षा : जन्म-जन्मांतरों के कर्मों को काटने की दीक्षा। उच्च कोटि की दीक्षाओं के लिए प्रथम चरण।

३. धन्वन्तरी दीक्षा : जिससे शरीर रोग रहित और बलवान बन सके। जीवन व साधनाओं में सफलता के लिए आवश्यक।

४. महालक्ष्मी दीक्षा : जीवन में आध्यात्मिक उन्नति के साथ ही साथ आवश्यक है भौतिक समृद्धता, इसी का उपाय है यह दीक्षा

५. शक्तिपात द्वारा कुण्डलिनी जागरण : लम्बी साधनाओं की अपेक्षा कुण्डलिनी जागरण की सहज पद्धति। समर्थ व सक्षम पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा।

६. भुवनेश्वरी दीक्षा : केवल मात्र एक साधना, एक दीक्षा से भोग व मोक्ष दोनों ही प्राप्त कर लेने का अवसर।

सम्पर्क

गुरुधाम,
३०६- कोहाट एन्क्लेव,
पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४,
फोन: ०११-७१८२२४८,

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,
हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर (राज.) ३४२००१,
फोन: ०२९१-३२२०९

Download Book ~ https://www.hindibook.in

आध्यात्मिकता के पथ पर बढ़ते चरण

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रति माह पढ़िए

. साधना ज्ञान में रोचकता की त्रिवेणी . अनूठी साधनाएं
. आकस्मिक धन प्राप्ति
. सम्मोहन . रोग निवारण
. ऋण मुक्ति . पौरुष प्राप्ति
. आयुर्वेद . ज्योतिष द्वारा समस्या निवारण

साथ ही प्रत्येक वार्षिक सदस्य को उपहार में देते हैं कोई एक दुर्लभ यंत्र . . . सर्वथा निःशुल्क उसके घर में या व्यापार स्थल में स्थापित होने योग्य

नोट - पत्रिका का वार्षिक सदस्यता शुल्क १५०/- डाक व्यय १८/- अतिरिक्त, चेक स्वीकार्य नहीं।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

हाई कोर्ट कालोनी, जोधपुर (राज.), फोन- ०२९१ ३२२०६

संरक्षक :- डॉ नारायण दत्त श्रीमाली

Download Book ~ https://www.hindibook.in